कोटा-बूंदी में कृषि महोत्सव प्रदर्शनी और प्रशिक्षण मेले का शुभारंभ

माननीय अध्यक्ष का संबोधन

आज कृषि महोत्सव में पधारे सभी किसानों, जिन्होंने अपनी मेहनत, अपने परिश्रम एवं अपनी शक्ति से अन्न का उत्पादन करके हम सबका पेट भरने का काम किया है, मैं उन सभी अन्नदाताओं को प्रणाम करता हूं।

भारत किसान एवं कृषि प्रधान देश है। इसीलिए हम कहते हैं, सीमा पर खड़ा जवान देश की रक्षा का काम कर रहा है, खेत में खड़ा किसान, चाहे ठिठुरती ठंड हो, तपती गर्मी हो, बरसात हो, वह अन्नदाता के रूप में अन्न का उत्पादन करके भारत को कृषि जगत में आत्मनिर्भर बनाने के लिए अपने लक्ष्य और संकल्प को पूरा कर रहा है। 75 वर्ष की लोकतंत्र की यात्रा में हमने कृषि क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन किए हैं। एक समय था, जब हमें भारत में खाद्यान्न यानी गेहूं से लेकर अन्य चीजें दुनिया के अन्य विकसित देशों से मंगानी पड़ती थीं, लेकिन भारत के किसान जय जवान, जय किसान के नारे के साथ हरित क्रांति लेकर आए थे। आज हम अन्न उत्पादन में पूरी दुनिया में सबसे बड़े देश के रूप में जाने जाते है। अभी हमारा संकल्प और कार्य पूरा नहीं हुआ है। हमें अनवरत प्रयास करने की आवश्यकता है।

हमने कृषि में कई परिवर्तन और नवाचार किए हैं, लेकिन इस बदलते परिप्रेक्ष्य और नवाचार में एग्रीकल्चर के क्षेत्र में श्वेत क्रांति, दूध उत्पादन, मछली उत्पादन में हमारी आधुनिक विरासत और नए तंत्र का उपयोग करते हुए हमें पूरी दुनिया में सबसे अग्रिम पंक्ति का देश बनना है। मेरा दावा है कि पूरी दुनिया में भारत की आर्थिक स्थिति की कोई रीढ़ की हड्डी है, तो वे किसान भाई हैं।

हमें अभी और परिवर्तन करने हैं। यह बदलता हुआ भारत है। बदलता हुआ भारत आत्मनिर्भर भारत तब बनेगा, जब दुनिया के अन्दर हो रहे नवाचार, नई तकनीक, नई कृषि परम्पराओं का उपयोग करते हुए कम जमीन पर ज्यादा उत्पादन होगा तथा लागत कम होगी। उत्पादन के बाद जब तक हमारे देश का किसान उसकी प्रोसेस करके, उसका वैल्यू एडीशन करके देश और दुनिया के बाजारों में बेचने का काम पूरा नहीं कर लेगा, तब तक अनवरत काम चलता रहेगा। हमारा जो नौजवान है, जिसने कृषि के अन्दर अपना स्टार्टअप बनाया है, जिसकी रिसर्च और इनोवेशन में बौद्धिक क्षमता है, उसका उपयोग देश और प्रदेश के किसानों को मिलना चाहिए।

यह हाडौती वह धरती है, जहां की जमीन सबसे उपजाऊ है। यहां पर चम्बल नदी है, पार्वती है तथा कालीसिंध नदी है। जितना पानी भारत के अन्दर किसी इलाके में होगा, उससे ज्यादा पानी यहां पर है, लेकिन आधुनिक खेती करने की परम्पराएं कम हैं। यहां का धनिया देश में और दुनिया में महत्व रखता है। मैं यहां के बासमती के चावल के बारे में बताता हूँ। जब मैं नीदरलैंड गया तो मैंने पूछा कि सबसे बढ़िया चावल कौन सा है तो उन्होंने कहा राजस्थान में बूंदी का है। मेरा सीना गर्व से फूल गया। जब मैं दुबई गया तो मैंने मसाला इंडस्ट्री वालों से पूछा कि धनिया कहां से आता है तो उन्होंने कहा कि धनिया तो कई जगहों से आता है, लेकिन जो महक और चमक है, वह कोटा और रामगंज मंडी की है। यह हमारी ताकत है। दुनिया के अन्दर सबसे बढ़िया लहसून हमारे यहां पैदा होता है, लेकिन कभी किसानों को उसके एवज में 80 रुपये तो कभी 8 रुपये मिलते हैं।

हमारे मन में पीड़ा होती है कि आखिर इतनी मेहनत से किसान ने लहसून उगाया है, लेकिन आने वाले समय में आप इन्हीं स्टार्टअप मेलों में देखेंगे कि किस तरीके से लहसून को दो साल, तीन साल रखकर जब उसकी प्रोसेसिंग के बाद भाव आएगा तो आप उसको बेचने का काम करेंगे।

अभी मैंने एक स्टार्टअप देखा। उस स्टार्टअप में हमारे जो फलोद्यान होते हैं, जिनका जूस निकलता है और जूस के बाद उसका किल्ट निकलता है, मैंने उसकी चॉकलेट देखी। आप मानकर चलिए कि उसके बाद उस जूस को दो साल तक छोटी पैंकिंग में रखा जा सकता है। ऐसे कई सारे स्टार्टअप्स हैं। हमने ड्रोन देखा है। किसान खुद खेती करना छोड़ रहे हैं। आज बच्चों को पढ़ाने के लिए लोग शहरों की तरफ आ जाते हैं और कॉन्ट्रैक्ट पर खेती कर लेती है। अब आने वाले समय के अन्दर लागत कम करने के लिए इस ड्रोन से आप बीज डाल सकते हैं, फसलों में कीड़े न लगे, उसके लिए एक साथ पेस्टिसाइड कर सकते हैं।

यह ड्रोन देखेगा कि कहां-कहां बीमारी है और वहीं पत्तियों पर पेस्टिसाइड डालने का काम करेगा। इस ड्रोन की कीमत कितनी है? अभी भी इस पर 90 प्रतिशत सब्सिडी है, अगर 10 लाख रुपये का ड्रोन है तो वह एक लाख रुपये में मिलेगा। किसान आपस में बांटकर काम करेंगे तो हर छोटी दूरी पर हम ड्रोन की इस टेक्नोलॉजी का उपयोग करने लगेंगे। ऐसे कई सारे स्टार्ट-अप्स हैं। इन स्टार्ट-अप्स को देखने के बाद मेरी इच्छा हुई कि मेरा शहर, मेरा संसदीय क्षेत्र, कृषि उत्पादन में हाड़ौती का क्षेत्र देश और दुनिया में सबसे आगे रहें। मैंने पिछली बार पशुपालन और किसान क्रेडिट कार्ड के लिए कार्यक्रम किया था, वित्त मंत्री जी आई थीं, उस समय भी मैंने कहा था कि समय लगेगा, लेकिन एक दिन इस इलाके के अंदर श्वेत क्रान्ति लेकर ही आएंगे और श्वेत क्रान्ति के साथ यहां पर मैंने जो प्रोसेसिंग प्लांट देखे हैं, आप भी देखकर जाना कि किस तरीके से दही बना, मक्खन बना, छाछ बनी, आइसक्रीम बनी। आने वाले समय के अंदर प्रोडक्शन के साथ-साथ, प्रोसेसिंग प्लांट लगेंगे और इसका वैल्यू एडिशन होगा, तब किसान की लागत निकलेगी और अच्छे दाम मिलेंगे। अभी बूंदी के अंदर सब्जियों को प्रोसेस करके, प्रिजर्व करने का काम चलता है। मैंने उससे पूछा कि अपने यहां सब्जियां बहुत होती हैं, उन्होंने कहा कि मुझे जितनी

सब्जियों की आवश्यकता है, चाहे मटर की आवश्यकता हो, गाजर की आवश्यकता हो, अभी उसकी 10 प्रतिशत सब्जियां ही मुझे मिलती हैं।

मैंने पिछली बार कहा था कि मैं एक लाख फलोद्यान दूंगा। इस बार मैंने लक्ष्य रखा है कि हर विधान सभा क्षेत्र के अंदर एक लाख फलोद्यान लगाएंगे और उसके साथ, उससे जो नींबू आएगा, अमरूद आएगा, आंवला आएगा, बेर आएगा, अब बेर के बारे में मैंने देखा कि बेर की प्रोसेसिंग होती है, उस आंवले की प्रोसेसिंग हो रही है। ये सब प्रोसेसिंग के साथ अगर हम फलोद्यान करने लगेंगे, मेड़ पर पेड़ लगाने लगेंगे तो आमदनी बढ़ेगी। मेरे किसान भाइयों, जब तक मेरे किसान भाइयों की आमदनी नहीं बढ़ेगी, देश की आर्थिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आ सकता है। मेरा मानना है और मुझे पीड़ा है, दर्द है कि मेरे किसान भाइयों की आमदनी बढ़नी ही चाहिए। मेरा किसान का बेटा 10 हजार रुपये या 15 हजार रुपये पर दुकान पर, ड्राइवर के रूप में नौकरी करता हुआ शहरों में नजर नहीं आए। वह गांव में रहकर एक लाख रुपये की आमदनी करता हुआ नजर आए। यह ताकत हाड़ौती के किसान में पैदा करनी है।

मुझे लगता है कि कई बार मैं सपना देखता हूं, लेकिन सपनों को सच करने के लिए उतनी ऊर्जा भी है, उतना आपका सहयोग भी है। जो कुछ भी जिम्मेदारी आपने मुझे दी है, दिल्ली की संसद में बैठकर, इन माननीय मंत्रियों को बुला-बुलाकर मैं यही कहता हूं कि मेरे किसान की आमदनी कैसे बढ़ सकती है, कैसे एग्रीकल्चर के अंदर नए बीज आएं, कम पेस्टिसाइड्स और जैविक खाद के रूप में क्या हो सकता है, इन सब पर चर्चा करने के बाद जो परिणाम नकलता है, उसके लिए किसान मेला लगाते हैं। इसलिए आने वाले समय के अंदर, मैं आपसे यही निवेदन करूंगा कि इन स्टार्ट-अप्स को देखकर जाएं।

यहां कृषि वैज्ञानिक आएं और उनके प्रशिक्षण को समझें। कौन सा नया बीज आया है, कितना पेस्टिसाइड लगाना चाहिए, कैसे अपनी मिट्टी की जांच करनी चाहिए, हमें ये सारे काम सीखकर जाने हैं। इसलिए आप सबसे निवेदन है, आज भी है, कल भी है। प्रत्येक

किसान, जिसने हर नई चीज की प्राकृतिक रूप से परम्परागत रूप से खेती की है, उस परम्परागत और आधुनिक खेती को मिलाकर नए आविष्कार करने का काम करे और उदाहरण पेश करें। दुनिया के लोग, देश के लोग हाड़ौती के खेतों को देखने आएं, मैं यह सपना देखना चाहता हूं और पशुपालन के रूप में डेयरी को देखने आएं, मैं यह देखना चाहता हूं। डेयरी के बाद प्रोसेसिंग प्लांट, उसके बाद अन्न का उत्पादन हो, उसके बाद अन्य उत्पादन हों, उनके वैल्यु एडिशन के काम को देखने के लिए दुनिया के लोग यहां पर आएं।

मैं दुनिया के जिस भी देश में जाता हूं, जैसे मैं पिछली बार मैक्सिको गया तो मैंने अपने एम्बेसडर से कहा कि मुझे कृषि विज्ञान केन्द्र जाना है, क्योंकि मैक्सिको के अंदर पहली बार गेहूं के नए बीज के उत्पादन का आविष्कार हुआ था। मैं मैक्सिको गया और वहां मैंने देखा कि उस गेहूं के नए बीज को पैदा करने वाला व्यक्ति कौन था, वह भारत का वैज्ञानिक था, जो आजाद हिंद फौज का एक सैनिक था। वह जहाज पर कुली के रूप में बैठकर गया था और कैलिफोर्निया होते हुए वहां पहुंचा। वह मैक्सिको की यूनिवर्सिटी के अंदर सबसे बड़ा वैज्ञानिक और डायरेक्टर बना। यह भारत की ताकत है। यह भारत की ताकत मैंने दुनिया के अंदर देखी है। दुनिया के कितने भी देशों में चले जाइए, चाहे आस्ट्रेलिया में चले जाइए, चाहे कनाडा में चले जाइए, वहां किसान मिलेगा तो भारत का मिलेगा। इसलिए भारत के किसान की ताकत बहुत बड़ी है। भारत के किसान में बहुत ऊर्जा है और काम करने तथा कठिन परिश्रम करने की ताकत है। इसलिए किसान भाइयो यहां पर आइए तथा कल अपने और भाइयों को भी लेकर आइए। हर स्टार्ट-अप पर जाओ, चीजों को समझो और जो समझ में आए, उसको देखो कि आप उसे कैसे उपयोग करना चाहते हैं। मैं आपके साथ हूं और धन की कोई कमी नहीं आएगी। हम सब मिलकर यहां पर नए स्टार्ट-अप्स के माध्यम से आधुनिक खेती करके कृषि विज्ञान केन्द्र के रूप में एक नए युग की शुरुआत करेंगे। आने वाले समय में हर ग्राम पंचायत में गोदाम होगा और पंचायत